① MA Sem III CC-12

Topic Q14 ~~Who are mentally retarded children?~~
Prepare a programme of educated such retarded children.
मानसिक स्तर पर मन्द बच्चे कौन हैं? इनकी शिक्षा के लिए एक कार्यक्रम बनावें।

Topic मानसिक स्तर पर मन्द अर्थात मन्द बुद्धि बच्चे (Mentally retarded children)

मानसिक स्तर पर मन्द अर्थात मन्द बुद्धि बच्चे वे हैं जिनकी बौद्धिक योग्यता औसत बालकों से कम होती है ऐसे बच्चों को मानसिक रूप से मन्द (mental retarded), दुर्बल (mental deficient), मानसिक न्यून (mental retarded), निर्बल बुद्धि (feeble minded), मन्द बुद्धि (Dull) के श्रेणी में आते हैं। Wakefield ने ऐसे बच्चों के लिए एक परिभाषा इस प्रकार निर्धारित किया है —

" मानसिक दुर्बलता का तात्पर्य अपर्याप्त सामाजिक, समायोजन, शिक्षण की न्यून क्षमता, परिपक्वता की मंद गति आदि विशेषताओं के समूह से है जिसका कारण न्यून बौद्धिक योग्यता है जो जन्मजात होती है अथवा आरम्भ से ही वर्तमान रहती है।"

"Mental retardation refers to that group of conditions which is characterised by inadequate social adjustment reduced capacity for learning slow rate of maturation, present singly or in combination, due to a degree of intellectual functioning which is below the average range, and usually is present from birth or early age."

इस परिभाषा में निम्नलिखित बातें मुख्य हैं —

(i) मन्द बुद्धि के बालकों में सामाजिक अभियोजन की क्षमता अपर्याप्त हो
(ii) सीखने की क्षमता न्यून होती है।
(iii) परिपक्वता की गति मन्द होती है।
(iv) औसत बालकों की तुलना में बुद्धि की मात्रा कम होती है जो जन्म अथवा प्रारम्भिक अवस्था से ही पाई जाती है।

Hollingworth के अनुसार :- "Feeble minded person is one who has originally intelligence quotient of 70 percent or less and whose status falls in the lowest two percent of human intellect."

(2)

(v) कभी तो सभी लक्षण अलग-अलग और कभी एक ही साथ देखे जाते हैं।

यद्यपि इस परिभाषा में मन्द-बुद्धि के बालकों का स्वरूप बहुत अंशों में स्पष्ट हो जाता है, फिर भी इससे यह ज्ञात नहीं होता है कि ऐसे बालकों की बौद्धिक योग्यता की सीमा आखिर कितनी है। कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इनकी बुद्धि-लब्धि 85 से 70 के बीच होती है। इस दृष्टिकोण से Hollingworth के अनुसार —

"मंद-बुद्धि व्यक्ति वह है जिसकी बुद्धि लब्धि मूलतः 70% अथवा इससे कम होती है और जो बुद्धि की दृष्टि से न्यूनतम दो प्रतिशत व्यक्तियों में होती है।"

इस श्रेणी के बालकों में मानसिक दुर्बल बालकों (mentally retarded children) के साथ-साथ मन्द-बुद्धि के बच्चों (Dull-children) की गणना भी की जाती है। मन्दबुद्धि बच्चों का तात्पर्य ऐसे बच्चों से है; जिनकी बुद्धि लब्धि (I.Q.) 70 से 85 की बीच होती है। Gates, Jersild, Mccormell & Challman (1964) के अनुसार 75 से 90 I.Q. वाले बच्चों को मन्द बुद्धि बालक कहते हैं।

मंदबुद्धि के बालकों के लक्षण या विशेषताएँ (Characteristics of mentally retarded children) :—

मानसिक न्यून या मन्द-बुद्धि के बच्चों की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—

(1) बौद्धिक क्षमता (Intellectual capacity) :—

मन्द बुद्धि के बच्चों की एक प्रमुख विशेषता उनकी सीमित बुद्धि है। उनकी बौद्धिक-योग्यता की उच्चतम सीमा 75 अथवा 70 बुद्धि-लब्धि है। बुद्धि-लब्धि के आधार पर उन्हें 3 श्रेणियों (Grades) में विभाजित कर सकते हैं। 50 से 75 बुद्धि-लब्धि वाले बालक को मूर्ख (moron), 26 से 49 बुद्धि-लब्धि वाले बालक को मूढ़ (imbecile) तथा 25 या इससे कम बुद्धि-लब्धि वाले बालक को जड़ (Idiot) कहते हैं। इसी तरह मन्द-बुद्धि के बालक (Dull Child) में 75 से 90 तक I.Q. पाई जाती है।

(2) शारीरिक लक्षण (Physical features) :- ऐसे बालकों का शरीर सामान्य या प्रतिभाशाली (Gifted) बच्चों की अपेक्षा नाटा, हल्का तथा अल्प विकसित होता है। उनका सामान्य स्वास्थ्य कमजोर रहता है। उनके सिर, कान, आँख, आदि अंगों में कई तरह की अनियमितता (anomalies) पाई जाती है।

(3)

(4) सामाजिक एवं आर्थिक अवस्था (Socio-economic condition):- मन्द बुद्धि के बच्चों का सम्बन्ध प्रायः निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर से रखता है। औसत लोगों की अपेक्षा इनके माता पिता का शिक्षित होने है। अतः उनकी बौद्धिक क्षमता भी कम होती है। इनके परिवार की आय, रहन सहन या खान-पान औसत परिवार से न्यून (inferior) होता है।

(5) सामाजिक एवं संवेगात्मक अवस्था (Socio-emotional condition):- सामाजीकरण (Socialisation) की दृष्टि से ऐसे बालक सामान्य या प्रतिभाशाली बच्चों से कम परिपक्व (matured) होते हैं। सामान्यतः प्रतिभाशाली बच्चे उनके साथ खेलने या मित्रता करना पसन्द नहीं करते हैं क्योंकि वे अपने से कम आयु के बच्चों के साथ खेलते नजर आते हैं। संवेगात्मक परिपक्वता की दृष्टि से भी ये पिछड़े होते हैं।

(6) सीखना एवं शिक्षा (Learning & education) :- शिक्षा की दृष्टि से ये बालक बहुत पिछड़े होते हैं। 50 से 75 बुद्धि-लब्धि वाले बच्चे आसान विषयों को सीख पाते हैं। 26 से 49 बुद्धि-लब्धि वाले किसी तरह सामान्य पढ़ना-लिखना सीख पाते हैं। लेकिन, 26 से कम बुद्धि-लब्धि वाले बालक सीखने में बिल्कुल असमर्थ होते हैं। सामूहिक रूप से उनका शब्द-कोष सीमित होता है तथा एकाग्रता (Concentration) की क्षमता बहुत ही कम होती है।

(7) अन्य विशेषताएँ (Other Characteristics) :- उपर्युक्त विशेषताओं के अतिरिक्त Hill ने मन्द बुद्धि के बच्चों की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया — (i) देर से प्रतिक्रिया करना।
(ii) वाचिक सीख (Verbal learning) की अपेक्षा क्रियात्मक सीख (Motor learning) की क्षमता अधिक होना।
(iii) किसी विषय की सत्यता को बिना तर्क-वितर्क के ही मान लेना।
(iv) दूसरों के निर्देश (Direction) पर चलना।
(v) अमूर्त चिन्तन (Abstract thinking) का अभाव।
(vi) वर्तमान समस्या के समाधान में अपने पूर्व अनुभवों से लाभ उठाने की क्षमता की कमी।
(vii) आत्म-मूल्यांकन (Self evaluation), आत्म-विश्वास (Self-confidence) तथा आत्म-बल की कमी।

(viii) अभिरुचि का सीमित होना।
(ix) संवेगों तथा प्रेरणाओं का सीमित होना।

Mc Cormick तथा Durea ने Hill के विचार का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि यदि संक्षेप में कहना चाहे तो ऐसे बालक बौद्धिक, शैक्षणिक, सामाजिक, शारीरिक तथा संवेगात्मक दृष्टिकोणों से औसत तथा प्रतिभाशाली बालकों की अपेक्षा पिछड़े होते हैं।

मंद-बुद्धि के बालकों के लिए एक विशिष्ट कार्यक्रम (की शिक्षा और अभियोजन) (1)
(Education & Adjustment of mentally retarded Children)

मानसिक दुर्बल या मन्द बुद्धि के बच्चों की समुचित शिक्षा एवं उनके अभियोजन के लिए विभिन्न उपायों को ~~करने से~~ समझ लेने पर भी सब श्रेणी के सभी बालकों को शिक्षा देना संभव नहीं होता है। जिन बच्चों की बुद्धि-लब्धि 25 से कम हैं उन्हें किसी भी तरह शिक्षित नहीं किया जा सकता है। इन्हें जीवित रहने के लिए कदम-कदम पर देख-भाल तथा संरक्षण की जरूरत होती है। जिन बालकों की बुद्धि-लब्धि 50 से कम हो, उन्हें साधारण शिक्षा दी जा सकती है। लेकिन, पब्लिक स्कूल में शिक्षा इनके लिए भी संभव नहीं है। केवल ऐसे बालक जिनकी बुद्धि लब्धि 50 से ऊपर हो, शिक्षा के योग्य माने जाते हैं।

शिक्षा-विशेषज्ञों एवं मनोवैज्ञानिकों ने मंद-बुद्धि के बच्चों की समुचित शिक्षा के लिए निम्नलिखित प्रयोजनों की सिफारिश की है —

(I) उपयुक्त पाठ्यक्रम (Suitable syllabus) :—

मन्दबुद्धि के बालकों के लिए उपयुक्त पाठ्यक्रम का होना बहुत आवश्यक है। कारण यह है कि जो पाठ्यक्रम सामान्य बालकों के लिए बनाया जाता है वह मन्द बुद्धि के बालकों के लिए काफी कठिन हो जाता है। अतः अपने पाठ्यक्रम को न समझ पाने के कारण वे शिक्षा के प्रति उदासीन हो जाते हैं। वर्ग में साथियों के सामने अपनी कमजोरी जाहिर होने पर उन में लज्जा एवं हीनभाव पैदा होने लगता है, जिसके कारण वे वर्ग से अनुपस्थित रहने लगते हैं, घर पर झूठ बोलते हैं, तथा आवारागर्दी में समय बिताने लगते हैं।

इस तरह एक तो वे ऐसे पाठ्यक्रम से कुछ लाभ नहीं उठा पाते हैं और दूसरे वे बाल-अपराध के शिकार बन जाते हैं। इसलिए शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने मन्द-बुद्धि के बालकों की योग्यता के अनुसार